तुबारि

www.pangi.in
अब अंग्रेजी, हिन्दी त पंगवाड़ी भाषा अन्तर असी।

Issue - 094,
April. 2020

तुसी सोबी पांगेई मेह्णु लीशु के मुबारक । जुग जुग जीओ लौते तुस सोब। इस मेह्ने दोकी तुबारी संस्करण तुं समाणि पेश करण जे अस सुआ खुश असे। छने पढ़ुण जे एन्हि कथाई त कविताई पुठ चिकिण दिए। वापिस इस पन्ने पुठ एण जे पन्ने पड़्डे दुतो विषय सूची पुठ चिकिण दिए।

धन्यवाद

क्र.	विषय सूची	पृ.
1	रंग बरंगी धरती	2
2	दॉदु कथा	3
3	तेनालीरामे समझदारी	4
4	लखे टके बोक	5
5	खिली गे चेहरे	6
6	उरीण-पुरीण	9
7	चुटकले	10
8	बदेए त समन्दरे	11

रंग बरंगी धरती

रंग बरंगी धरती गभुरो, रंग बरंगी धरती।
हेरे गभुरो इस धरती पुठ, बुटे नीले नीले हिलते।
एन्हि पुठ बुठो चड़ी चखुरु, मठे मठे राग लान्ते।
एन्हि पढे रोज भ्यागे, मठ मठ रऊस चरते।

रंग बरंगी धरती गभुरो,
रंग बरंगी धरती।
बोडे बोडे फाट त
दरियो, एन्के रौंआ खरा
एंता।
एन्के शान बधाई छती,
जंगले निलीयार।
सियाणी नानी इस जंगले, हमेशा पेहरा देन्ती।

रंग बरंगी धरती गभुरो, रंग बरंगी धरती।
जंगले धरती जुओई गभुरो, सुआ पुराणा नाता।
ऊछ, ढबू, शेर, हाथी सोबी, जंगल अब्बल लगता ।
पुओणी त बियार जंगले, सोबी के दुख कष्ट हारती।

रंग बरंगी धरती गभुरो,
रंग बरंगी धरती।
नीले भरोरे हिलणे बाड़े,
जंगल न काटे।
जंगली जीवी मार कइ,
तुस, सोबी मौत न बांटे।
जंगले जीव मुकते ईं सोब दुनिया खतम।
रंग बरंगी धरती गभुरो, रंग बरंगी धरती।

विषय सूची

धाणि त तसे जुएली केआं अब सते बंटी अठ फेरे लवाण चाहिए। सत फेरे तेन्के व्याहे, अठुं जे फेरा असा, से कुई जे लवाण चहिए कि से कुई बचान्ते त तेस पढ़ान्ते ।

दॉदू कथा

यक जगाई सुआ ढबु हसते खेलते बिश्तेथ। चीकू नोउए ढबु पन्जु जामीली एणे बाड़ी थी। जामीली एण सिर्फ दुई रोज बाकी थिए। से खुश भोई कइ नचण लगो थिआ।

तोउं यक रोज राति सुआ मेघे लगण लगी। मेघे अति जोरि जुओई लगो थी कि हेरते हेरते पूरु ग्रां पाणि बेलि भरी गऊ। किछ ढबु त बुटी पुठ चढ़ी गे त किछ ढबु ईएर ओवोर अपु जान बचाण अन्तर लग गे। पुओणी अतु भरी गऊ कि चीकू अपु ईया बोउ केआं केहीर गा। चीकू ई रोलती रेहि गई।

भ्याग भुन्ते भुन्ते मेघ शुधि गा। सोबी ढबु चैने सांस नी त अपु अपु टबरे तोपण लग गे। सोबी अपु अपु सोब मेई गे, पर चीकू कोई पता न चला। पाणि अन्तर बहोई कइ चीकू सुआ दूर कंटी बुच शची गो थिआ। तेठि अपु मदत करण जे हक देण लगो थिआ।

तोउं तेठि यक बानर आ। तेन चीकू कंटी अन्तरा बाहरी किढ़ा। चीकू बानरे धन्यवाद किया त बोलु “तु मोउं जुओई में गी हंठ, शुई में जामीली असी। सुआ मौज मस्ती कते।” बनरे बोलु “ठीक सी।” तोउं से दुहे जेईं टोऊ देन्ते देन्ते घेई गे। ईएर, चीकू ई चीकू भाड़ण लगो थी त तेस यकीन थिआ कि तसे चीकू जरुर वापस एन्ता। जिहांणी चीकू गी पुजा त तसे ई बोउ सुआ खुश भोई गे। चीकू अपु नोउअ मितर बानर सोबी ढबू जुओई मीइया त तेन्हि बि बानरे धन्यवाद किआ। हेउस चीकू जामीली सुआ धुमधाम जुओई मनेई। सोब ढबु त बदर मीइ कइ नचे खेले त चीकू बधाई दिती।

एस कथाई केआं ईं शिक्षा मेती कि मुसीबत अन्तर फंसो मेह्णु के मदत जरुर करीण चाहिए।

विषय सूची

तेनालीरामे समझदारी

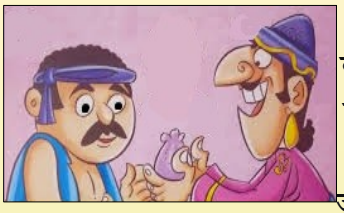

यक लिंगि दुई मेह्णु राजा कृष्णदेव राये दरबार अन्तर हाजर किए। यक नउ थिऊ भोला त होरे नउ थिऊ घनश्याम। भोले हथ जोड़ी कइ बोलु, “महाराज, ई में मतर घनश्याम भो। किछ मेहने पेहले मोउं तीर्थयात्रा पुठ घेण थिऊ त मेईं अपु दश सुन्ने मलकी एस केईं सम्हाड़ण जे छओ थिए। आज जपल मेईं वापस एई कइ अपु मलकी मगे त ए में मलकी वापस देण केआं मुकरी गा। अब महाराज तुसे न्याय करे।” राजे घनश्याम केआं पुछु त से मुकीर गा। राजा सोच अन्तर घेई गा कि एन्हि दुहि बुचा कोऊं सच्चा असा त कोऊं झूठा? तोउं राजे तेनलीराम जे सच झूठे फैसला करण जे बोलु।

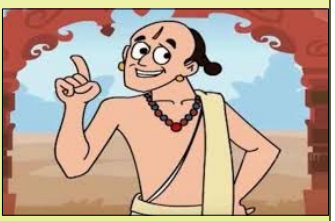

तेनालीरामे चेरे तकर सोच कइ भोले जे बोलु “हॉ त भाई भोला, जपल तेईं मलकी घनश्यामे धे दते त तेठि कोऊं टेका जेईं बि थिआ ना?” “ऑ जी, यक पाणि खुहा जरुर तेठि थिआ।” सधे साधे भोले बोलु त सोब दरबारी हसण लगे। त तेन्हि बोलु “भला, खुहा बि कि कदी उगाह दी सकता ना?” पर तेनालीरामे भोले जे बोलु, “ईं कर भोलिया, तु घेई कइ तेस खुहे केआं यक घड़ू पुआणी भरी कइ आई, अभेईए सच झूठे फैसला भोई घेन्ता।” भोला उनि कुशी कइ घेई गा।

सोब दरबारी त राजा हैरान थिए कि तेनालीराम अखिर कि करण चाहन्ता? घनश्याम बि चुपचाप सोचुण लगो थिआ। धिक चेरे ईं तेनालीरामे घनश्याम केआं पुछु “कि घनश्यामा, तें मतर भोला अभेईं तकर वापस न आ, कि बझह भोई सकती?” “जी खुहा इठीआ सुआ दूर असा, तोउं त चेरे लगो असु।” घनश्यामे मुँह केआं अजगता निस गऊ।

विषय सूची

“महाराज फैसला भोई गा। भोले सच्चे घनश्यामे धे मलकी दुतो थिए। भला एस कि पता कि खुहा इठिया सुआ दूरा असा?” तेनालीरामे बोलु। घनश्यामे शर्मे बझई जुओई मगरी उनि कुशेरी छई।

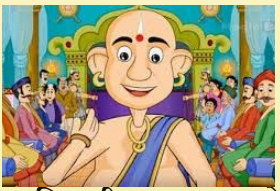

तेनालीरामे समझदारी बझई जुओई दरबार अन्तर फि जई जईकार भुण लगे। अपल तकर भोला बि वापस एई गो थिआ। घनश्यामे तेस केआं माफी मगी त महाराज जे वादा किआ कि से आजे ईं अपु मतरे मलकी वापस दी छता त अईंदा लिए फि केसे जुओई बि बेईमानी न कता।

लखे टके बोक

1. धर्मी मेह्णु परमेश्वर कदि ढुके मरण ना देन्ता, पर दुष्ट मेह्णु के इच्छा बि पूरी भुण ना देन्ता।

2. धर्मी मेह्णु याद कर कइ सोब मेह्णु तन्हि अशुष देन्ते, पर दुष्ट मेह्णु के नउ खतम भोई घेन्तु।

3. जपल घमण्ड भुन्ता, तपल बेज्जती बि भुन्ती, पर सधे साधे मेह्णु अन्तर अक्ल भुन्ती।

4. जेस रोज भगवाने कोप घेन्ता तेस रोज धने कोई लाभ ना भुन्ता, पर धर्म मौत केईया बि बचांता।

5. दाह दया करणेवाड़ा मेह्णु अपणेरी भलु कता, पर जे नकठोर असे, से अपणेरी जिसम दुख देन्ता।

विषय सूची

खिली गे, चेहरे।

विपिन त विवेक खरे अब्बल दोस्त थिए। विपिने बोउए खरा व्यापार थिआ, त विवेके बोउए रदी त छोटी मोटी समाने दुकान थी। पर विवेके बोउए अपु गरीबी असर कदी विवेके पढ़ाई पुठ न दता भुण। तेन्के सोचुण थिऊ कि तेन्हि जति बि मेहनत करीण एईएल से कते, पर विवेके पढ़ाई लिखाई कदी न छड़ान्ते। विवेक बि अपु ईये बोउए इच्छा पूरी करण जे तीं मेहनत करण लगो थिआ। से हर टेम पढ़ता ईं रेहंताथ। एईए बझह थी कि से हर साल कलास अन्तर पेहले नम्भर पुठ एन्ताथ।

तिएस बि रोजे ईं विपिन त विवेक खांजे खा लगो थिए। अजागता विपिने बोलु "होर हफ्ते में जामीली असी। मेईं इस फेर अपु बोउ जे बोल छओ असु कि अउं अपु जामीली धुमधाम जुओई मनांता। अपु सोबी दोस्ती अपु जामीली तिएस भिआन्ता। में बोक बोउ मनि गो असा। तेन्हि ही यक अब्बल कैके बि बोल छो असु।" धिक रुकि कइ विपिने फि बोलु "तु में सोबी केआं अब्बल मतर भुओ विवेका! तोउं त, तोउ तिएस जरुर एण।" विपिने बोक शुण कइ विवेके खुश भोई कइ बोलु "हॉ, वाह जी, वाह जी, ए त अब्बल बोक असी। मोउं जामीली धाम अब्बल लगती। अउं तें जामीली दिएस जरुर ऐन्ता।"

विवेके जामीली धाम खाणे बोल त छऊ पर तसे समझ अन्तर न थी एण लगो कि विपिने धे गिफ्ट की देण? विपिन त अमीर ईए बोउए कुआ भो। तोउं त तेस धे मठड़ त सस्ता गिफ्ट न दी सकता। एसे बोक सोचते सोचते सुआ रोज भोई गे, किछ समझ न आऊ।

विषय सूची

यक रोज से अपु बोउए दुकान जे गा। तसे दमाक अन्तर अभेई बि विपिने जामीली गिफ्टे समस्या घुमण लगो थी। विवेक दुकान पुठ बिश कइ ईएर ओवोर हेरण लगो थिआ। अजागता तसे नजर यक बाल पत्रिका पुठ गई। तेन खुश भोई कइ से बाल पत्रिका टाई छई। तोउं तेन से खोल कइ हेरी त तेस अन्तर सुआ अब्बल अब्बल कथा, कविता त फोटोबाड़ी कथेई थी। तेन यक कथा पढ़ी। कथा पढ़ी कइ तेस मज्जा एई गा। तोउं यकदम तसे मन अन्तर विचार आ कि किस न रदी अन्तरा इसेरी ईं होरी कतबी तोपी कइ किठेरु त तेन्हि यक अब्बल लफापे अन्तर बन्हि कइ विपिने जामीली पुठ तसे धे गिफ्ट दियुं। एसे बेलि पैसी के बचत त भुन्ति। ईं भुन्ति त साते साते इन्हि कतबी के गिफ्ट विपिन सुआ अब्बल लगियाल। पर तेस घड़ी से फि सोचण लगा कि अतो अमीर गीहे कोईए जामाली पुठ इ रदी कतबी के गिफ्ट? तसे ई बोउ कि सोचियेल? पर तसे मन बोलु, “विपिना! तें मतर भुओ विवेका! होर तोउ गिफ्ट अपु मतरे धे देण असी, न कि तसे ईए बोउए धे। तसे ई बोउ कि सोचियल, तस केआं तोउ की मतलब?”

तोउं तेन झठ रदी अन्तरा अब्बल अब्बल दश बाल पत्रिका तेली त से बखरी रखी छेई त झोड़े अन्तर की त वापस गी एई गा। गी एई कइ तेन यक अब्बल डाबे अन्तर से पत्रिका छेई त यक अब्बल ईं गिफ्ट बड़ाई छड़ा। मठे मठे विपिने जामीली बि एई गई।

ब्यादी जे विवेक अपु गिफ्ट घिन कइ विपिने गी पुज गा। सोब मेह्णु विपिने जामीली बधाई त गिफ्ट देण लगो थिए।

विषय सूची

विवेके मठे विपिने पति कना पुज कइ बोलु "जामीली तोउं सुआ सुआ बधाई!" विवेक बोक शुण कइ विपिने पतू हेरु। विवेक हेर कइ विपिने तसे गड़े मी कइ बोलु "धन्यवाद, तें विवेका।" फि विवेके अपु गिफ्ट तसे धे आकाई कइ बोलु "इ मठड़ ईं गिफ्ट में सोबी केआं टचारे मतरे लिए।" विपिने जपल विवेके गिफ्ट हेरा त से उदास भोई गा। तेन विवेक जे बोलु "मेईं अपु जामीली तोउं नेई मनओ विवेका कि मोउं सुआ गिफ्ट मेईयाल। अउं त ईं चाहन्ताथ कि एस बहाने सोब मतर यक सात हें गी साते खांजे खाल, नचियल खेलियाल त मौज मस्ती करियाल। पर तेईं बि गिफ्ट पुठ फजूल खर्च कइ छड़ा।"

तसे बोके शुण कइ विवेके बोलु "अउं जाणता कि में मतर सिर्फ प्यारे ढुक असा, गिफ्टी न। मेईं आज जे गिफ्ट अपु टचारे मतर जे अह्णतो असी, तेस अन्तर मेईं केसे किसमी कोई खर्चा नेई कियो।" ईं बोल कइ तेन सोब बोके अपु मतर विपिन जे बताई छेई। सोब बोके शुण कइ विपिन खुश भोई कइ उछड़ण लगा। तोउं तेन बोलु "अउं अपु मतर पुठ ईहांणी थोड़ी न घमण्ड़ कता। में मतर त असा ईं लाखो अन्तर यक। होर आज में जामीली पुठ तसे ई गिफ्ट बि बेशकिमती असी। सच्चे कतबी केआं अब्बल होरा कोई गिफ्ट न भोई सकता।"

तेन्के भेएड़ खाखड़ बिशो विपिने बोउ तेन्के दुही के बोके शुणण लगो थिआ। तेस बि विवेके ए अनौखी गिफ्ट सुआ अब्बल लगी। तेन विवेके मगरी पुठ हथ रखी कइ बोलु "कोईया, सच्चे, तें ए गिफ्ट सोबी गिफ्टी केआं अब्बल असी।" बोउए बोक शुण कइ विपिन त विवेक दुही के चेहरे खिल गे।

विषय सूची

उरीण-पुरीण

1. यके शक्ल त यके न, तेन्के बुच भुन्तु कम। बोलुण न समझते, शुणते साते, तेन्हि दुहि के बुच सुरंग असी।

2. बेशक नेई हथ अन्तर हथ, जीन्ता से सोबी जुओई साते।

3. यक बुटे अनोखा खेल, मोती फल एन्ते टीरी हेरते हेरते। जेठि लगते तठि मुखी घेन्ते, जे फल झड़ते से पुओणि बण घेन्ते।

4. यक पहेली हमेशा नोई नवेली असी, जेन जाणू से जीन्ता। जीन्ते अन्तरा मौड़दा निसता, मौड़दे अन्तरा जीन्ता।

5. अनपढ़ी जुओई न कती बोक, रखती अपु दिल अन्तर ज्ञान। मेती सोब जगाई, इज्जत गुणगान में कते सोब।

6. टाण जे नरम, सूरत अब्बल। राति मोती, दिसाई पुवाणी।

7. नीला टोप, लाल गड़बाना। पेठ अन्तर असी, मोती माड़ा।

8. जादू लोडी हेरे, बगैर तेले, बगैर बती। नक चकते झठ टगड़ियार सोब कना फैलांती।

अपु जवाब चेक करण जे पेज 11 हेरे।

गिहा नसते टेम यक लिगिं जरुर ई सोचे कि मजबुरी असी कि हें जिंदगी किआं ज्यदा जरुरी असु। मुँहु जोई मास्क ले या तुसी केईं गड़ाबना त भोल, तेस अपु मुँहु जोई लाई सकते।

विषय सूची

तुबारि मासिक पत्रिका

- तुबारि मासिक पत्रिका ई उम्मीद करुं लगो असे कि एण बाड़े रोज अन्तर सुआ मेह्णु इस कम अन्तर साथोट देन्ते।
- इस तुबारि मासिक पत्रिका समाचार पत्र एक्ट अन्तर रिजिष्ट्रि नेई भो। सिर्फ पांगी घाटि अन्तर पढ़ुं जे त भाषाई सुहलियत करण जे इ पत्रिका शुरु किओ असी।
- तुबारि यक अवाणिज्यिक पत्रिका भो।
- तुबारि पत्रिका कोई मेह्णु] जनजाति] त संस्कृति गलती कढ़ेण जे नेई छपाण लगो। अगर कोई ईं सोचता बि त अस जिम्मेबार नेई।
- छपाणे पेहले सोब आर्टिकल दुई टाई पांगेई मेह्णु हरालो असे। इ त खुली बोक असी कि पेहलि बार पांगवाड़ि लिखणे सुआ मुशकिल भुन्ति त गलती बि भुन्ति। अगर कोई लिखणे गलती असी त असी जे जरूर बोले। त अस तसे होरे संस्करण पुठ ठीक करणे कोशिश कते।
- आर्टिकल्स ना मिएल, या घाटि मेह्णु के साथोट ना मिएल त तुबारि पत्रिका कदी बि बंद भुई सकती।
- कोई चीज छपां असी या नेई छपां जे तुबारि संपादकीय टीमे पुरा अधिकार असा।
- अस किलाड़ केन्द्रीय पुस्तकालय, त बजार हरिराम लाले दुकान अन्तर तुबारि ड्रॉप बॉक्स पुठ बि अपुं सझाव ओर अर्टिक्लस रखुं जे सुविधा किओ असी।
- अस सोबी पांगी मेह्णु जे हात जोड़ कइ अनुरोध कते कि तुस बि कोई अछा अर्टिक्ल पुराणि या नोई कथा, कहावत, कविता, त नोई घीत (पागवाड़ी अन्तर लिख कइ छपां जे हेंघे दिए।

तुबारि संपादकीय टीम

9418429574
9418329200
9418411199
9418904168
9459828290

चुटकले

1. ई अपु कुई केआं पुछती:- तु इतिहास अन्तर फैल किस भुई?

कुई:- त की करुं, ईये? मास्टर जी मोउं केआं सुआ पुराणे सवाल पुछते, जपल कि अउं जमोरी बि नेओथ।

2. सोनू:- ओई पिंकी! तु जे अखबार पढ़ण लगो असी ए उमली असी।

पिंकी:- त की भु? अउं पढ़ण थोड़ी लगो असी, अउं त सिर्फ फोटो हेरण लगो असी।

3. बोउ कुआ केआं पुछता:- कोईया! तेईं टकड़ी त बटे स्कूल जे किस निओ असे?

कुआ:- बोउआ, मास्टर जी बोता कि पेहले तोले, तोउं बोले।

विषय सूची

उरीण-पुरीण के जवाब

1- नक, 2-उडार, 3-फुवारे, 4-अनुण, 5-कताब, 6-ओशी तोपू, 7-लाल पिपी, 8- बेटरी

बदेए त समन्दरे

यक रोज समन्दरे बदेए केआं पुछू, “मैं पुओणी त लुण की असु। एस त कोई बि जानवर या चड़ी चखुरु न पीण चाहन्ते। फि तु मैं पुआणि नी कइ की करण चाहन्ता?” “मेघे लग कइ जरुरत बाड़ी के धे देन्ता” बदेए जवाब दता।

“भला लुणकी पाणि जरुरत केस पड़ती?” समन्दर बदेए बोक समझ न आई। तोउं बदेए बोता “जपल तकर से पुओणी तोउ केईं असु, तपल तकर से लुणकी असु। मोउं नेण केआं पता से मुठू भोई घेन्तु।” समन्दरे खुश भोई कइ पुछु, “से कीं?” बदेए बोलु “तुस होरी केआं जतु नेन्ते, तसे हेसाब जुओई होरी कें धे घट देन्ते। एईंए बझह असी कि तें पुओणी हमेशा लुणकी भुन्तु।” पर अउं जतु पुओणी तोउ केआं नेन्ता, किछ बि अपु अपफ न रखता। सोब होरी कें धे दी छता। एईंए असली बझह असी कि तोउ केआं जपल पुओणी मोउं केईं एन्तु त से नमकीन केआं मुठू भोई घेन्तु। तेस अन्तर किछ बि लुणकी न रेहंतु।”

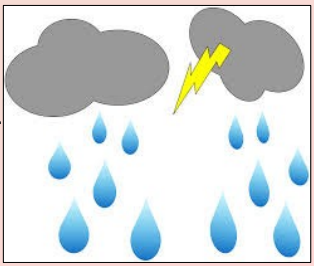

बदेए अति खरी खरी बोके शुण कइ समन्दर चुप भोई गा।

विषय सूची